भाषा विषयक क्षमता

अपेक्षा यह है कि बारहवीं कक्षा के अंत तक विद्यार्थियों में भाषा संबंधी निम्नलिखित क्षमताएँ विकसित हों :

अ.क्र.	क्षमता	क्षमता विस्तार
१.	**श्रवण**	१. गद्य, पद्य की रसानुभूति एवं भाषा के आलंकारिक सौंदर्य को सुनना, समझना तथा सुनाना । २. विभिन्न जनसंचार माध्यमों से प्राप्त जानकारी को सुनना तथा उसका उपयोग कर विभिन्न प्रतियोगिताओं में सुनाना । ३. अनूदित साहित्य को सुनना तथा अपना मंतव्य सुनाना ।
२.	**भाषण–संभाषण**	१. विविध कार्यक्रमों में सहभागी होना तथा कार्यक्रम का सूत्र संचालन करना । २. विभिन्न विषयों के परिसंवादों में सहभागी होकर निर्भीकता से चर्चा करना । ३. राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय समकालीन विषयों को चुनकर उनपर समूह में चर्चा का आयोजन करना ।
३.	**वाचन**	१. व्यक्तित्व विकास के लिए विभिन्न महापुरुषों के भाषण तथा साहित्यकारों की रचनाओं का वाचन करना । २. विभिन्न क्षेत्रों के शीर्षस्थ व्यक्तियों की आत्मकथाओं का वाचन करना । ३. विविध विषयों के मूल ग्रंथों का वाचन करना ।
४.	**लेखन**	१. संगणक में प्रयुक्त होने वाली लिपि की जानकारी प्राप्त करते हुए उसका उपयोग करना । २. ब्लॉग लेखन, पल्लवन तथा फीचर लेखन का अध्ययन करते हुए लेखन करना । ३. विभिन्न कार्यक्रमों का संपूर्ण नियोजन करते हुए आवश्यक प्रस्तुति करने हेतु लेखन करना (Event Management) ।
५.	**भाषा अध्ययन (व्याकरण)**	१. रस (शृंगार, शांत, बीभत्स, रौद्र, अद्‌भुत) २. अलंकार (अर्थालंकार) ३. वाक्य शुद्‌धीकरण, काल परिवर्तन, मुहावरे
६.	**अध्ययन कौशल**	१. अंतरजाल (इंटरनेट), क्यूआर कोड, विभिन्न चैनल देखकर उनका उपयोग करना । २. पारिभाषिक शब्दावली – बैंक, वाणिज्य, विधि तथा विज्ञान से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली को जानना, समझना तथा प्रयोग करना ।